७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

1

वह आपका जीवन भी बदल सकता है

2

दो व्यक्ति रेलगाड़ी में अमेरिका से हजारों मील दूर सफर कर रहे थे।

क्योंकि उनका सफर काफी लम्बा था, वे बातें करके अपना समय गुजार रहे थे।

वे मौसम के बारे में बातें कर रहे थे। वे राजनीति के विषय में बातें कर रहे थे।

वे अपने बचपन के अनुभवों, अपने घरवालों और अपनी शादियों के बारे में भी बातें कर रहे थे। उनका वार्तालाप अन्त में धर्म की बात पर होने लगा। उनमें से एक नास्तिक था।

तो दूसरा ईसाई था। एक परमेश्वर पर बिल्कुल विश्वास नहीं करता था तो दूसरे को परमेश्वर पर पक्का विश्वास था।

एक ने कभी भी बाइबिल नहीं पढ़ी थी। तो दूसरा उसे हमेशा पढ़ता था।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

3

दोपहर बाद इस गर्मी के दिन उनकी चर्चा का विषय यीशु मसीह थे। उस नास्तिक ने अपने मसीही भाई से कुछ बहुत ही जरूरी प्रश्न पूछे। प्रश्न जैसेः तुम मसीही क्यों हो? क्या यह एक भूगोल का हादसा है? तुमने एक मसीही देश में जन्म लिया होगा, है न? यीशू किस प्रकार दूसरे महान लोगों से अलग है? क्या यीशु नैतिक शिक्षक या आचार संबंधी ज्ञानी से बढ़कर है? तुम इतने निश्चित कैसे हो कि यीशु ही सब कुछ हैं जो होने का वह दावा करता है? तुम इतना विश्वास कैसे रख सकते हो कि यीशु स्वर्गीय है और सदा का जीवन देने का उसका वायदा सच्चा है? दोपहर के समय उस गर्मी के दिन उस नास्तिक के किए गए प्रश्न काफी अच्छे प्रश्न थे। उसके मसीही मित्र ने उसको कुछ उतर दिए। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि उन प्रश्नों के ठोस उत्तर और उन उतरों को समझने का अर्थ अनन्त जीवन है।

4

हमारे संसार में बेशक प्रसिद्ध लोग थे। उन लोगों का इस संसार को बेहतर जगह बनाने में काफी योगदान रहा।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

5

राजाओं, राष्ट्रपतियों, धर्मियों, फौजी नेताओं, वैज्ञानिकों और कलाकारों ने इस दुनिया पर अपनी छाप छोड़ दी है।

उनका नाम पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

6

परन्तु एक नाम इन सब नामों से ऊपर है। इतिहास भी उसके जन्म से पूर्व और बाद में विभाजित किया गया है।

उसका नाम यीशु है।

पूरे इतिहास में यीशु का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

परन्तु उसका नाम सुनना एक बात है, और वास्तव में मानना दूसरी बात है।

7

आज रात मैं आपको इतिहास के यीशु और बाइबिल के यीशु के साथ अधिक एवं पूरी तरह परिचित कराना चाहूँगा।

आइए शुरू से ही आरंभ करें। आप सोच रहे होंगे-कि यह यीशु कौन है? यह अलग कैसे है?

क्या वह केवल अच्छा आदमी, एक नैतिक शिक्षक या एक आचार संबंधी तत्व ज्ञानी ही था। दो चेले भी इन्हीं बातों पर सोच विचार कर रहे थे।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

8

पुनरूत्थान के दिन यीशु इमाउस के रास्ते पर जब दो चेलों से मिले

9

तो उसने उन्हें भविष्यवाणियाँ दिखाई जो कुछ दिनों पहले हुई थीं।

10

(मूलपाठ : लूका २४ : २५,२७)
"हे निर्बुद्धियों, और भविष्यवक्ताों की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो!

11

तब उसने मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से आरंभ करके,

12

सारे पवित्रशास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया।"

लूका २४ : २५,२७

13

आइए हम उन सबूतों को देखे जो यह प्रमाण देते हैं कि यीशु ही मसीह है।

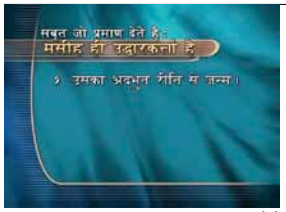

14

उसका अद्भुत रीति से जन्म यीशु के जन्म से बहुत पहले, यशायाह ने यह भविष्यवाणी की:

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

15

(मूलपाठ : यशायाह ७ : १४)

"इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा :

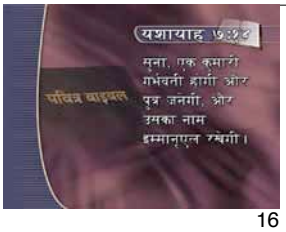

16

सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी।"

यशायाह ७ : १४

17

(दृश्य)

यीशु के कई नाम हैं, इमानूएल, यीशु, मुक्तिदाता, मसीह और उद्धारकर्त्ता।

यशायाह की यह भविष्यवाणी कि यीशु का जन्म एक कुंवारी से होगा उसके जन्म से ६०० वर्ष पहले लिखी गई थी।

एक स्वर्गदूत ने यह भविष्यवाणी की कि यीशु ही मसीह है एक सबूत के रूप में उद्धृत किया था। आइए देखें कि किस तरह स्वर्गदूत ने यीशु के जन्म के बारे में कुंवारी मरियम को बताया।

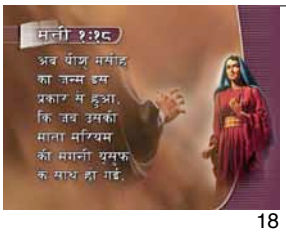

18

(मत्ती १ : १८)

"अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई,

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

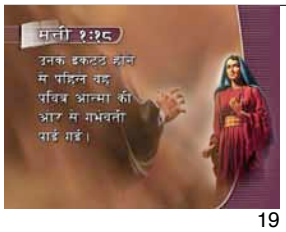

19

उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।"

मत्ती १ : १८

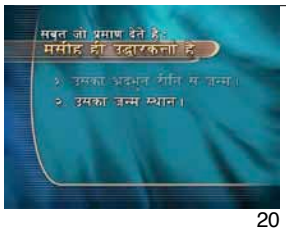

20

उसका जन्म स्थान

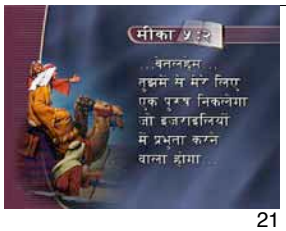

21

(मूलपाठ : मीका ५ : २)

"....बेतलहेम...तुझमें से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा जो इजराइलियों में प्रभुता करने वाला होगा....."

मीका ५ : २

यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है कि यीशु का जन्म बेतलहेम में हुआ था, ठीक उस शहर में जिसकी ६०० वर्ष पहले भविष्यवाणी हुई।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

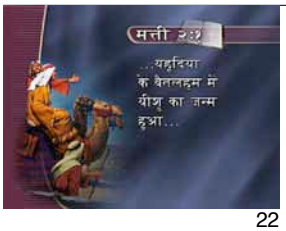

22

(मूलपाठ : मत्ती २ : १)

".....यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ....."

मत्ती २ : १

नया नियम मीका की भविष्यवाणी को पूरा करने का आश्वासन देता है। यीशु एक अच्छे आदमी से बढ़कर था, एक नैतिक शिक्षक से बढ़कर था, एक आचार संबंधी तत्व ज्ञानी से बढ़कर था। वह एक कुवांरी से जन्मा था जैसे यशायाह भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की थी। वह बेतलहम में पैदा हुआ जैसे मीका भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की थी।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

23

बाइबिल की भविष्यवाणियाँ बहुत साल पहले ही हमें यीशु के जीवन की महत्वपूर्ण बातें साफ-साफ बताती हैं। ये भविष्यवाणियाँ बिल्कुल वैसी ही पूरी हुई जैसे की गई थीं। जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो परमेश्वर के पास एक योजना थी। उसके प्यार ने यीशु- उसके पुत्र को इस पृथ्वी पर आने के लिए कहा, कि वह पूर्ण जीवन जिए और हमारे पापों के लिए अपनी जान दे। उसने हमारी जगह ले ली ताकि हमें अनन्त जीवन मिले, यदि हम उसकी योजना को मान लें कि वह हमारा मुक्तिदाता है तो इसे उद्धारपाने की योजना कहते हैं।

24

लगभग २००० वर्ष पहले पूर्व दिशा के ज्योतिषियों ने बाइबिल का अध्ययन किया था।
उन्होंने यह पढ़ा था कि एक महान राजा आएगा और उन्हें मालूम था कि उसके आने का समय हो गया है।

25

उन्हें मालूम था कि समय हो गया है और सितारा उस नये जन्मे राजा के पैदा होने का चिन्ह था।
उन्होंने उसे बेतलहम में पाया और शीश झुकाकर यीशु की उपासना की।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

26

(मूलपाठ : लूका २ : ७)

"और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर,

27

चरनी में रखा; क्योंकि उनके लिए सराय में जगह न थी।"

लूका २ : ७

28

सराय में कोई कमरा खाली नहीं था, इसलिए यीशु को एक बक्से में डालकर वहाँ रखा गया जहाँ भेड़-बकरियों को रखा जाता था।

वह लाचार पैदा हुआ।

29

उसकी माँ बहुत दयालु थी,परन्तु वह जवान थी जब स्वर्गदूत ने आकर उसे बताया कि वह परमेश्वर के पुत्र को जन्म देगी।

30

यधपि वह "परमेश्वर का पुत्र" था, वह बिल्कुल अपने स्वर्गीय पिता के समान पूर्णरूप से परमेश्वर था।

पौलुस कहता है कि वह परमेश्वर के बराबर था और उसने मनुष्य की तरह एक सेवक का रूप धारण किया।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

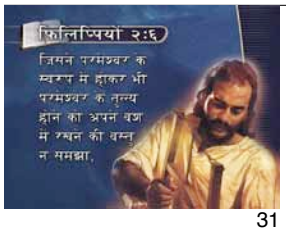

31

(मूलपाठ : फिलिप्पियों २ : ६)

"..... जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा,

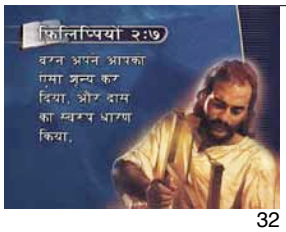

32

वरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया,

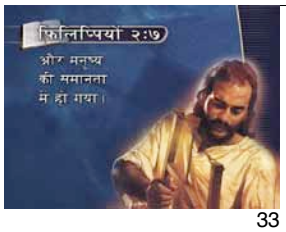

33

और मनुष्य की समानता में हो गया।"

फिलिप्पियों २ : ६, ७

34

इस पृथ्वी पर जीवन बिताने के लिए यीशु हमारी तरह बना।

परन्तु वह शुद्ध, साफ, बिना कोई दाग के था, ताकि वह अपने जीवन का बलिदान दे सके और हमें अनन्त जीवन मिल सके।

मसीह के जीवन के अन्तिम २४ घण्टों में, सदियों पुरानी भविष्यवाणियाँ विस्तारपूर्वक पूरी हुई।

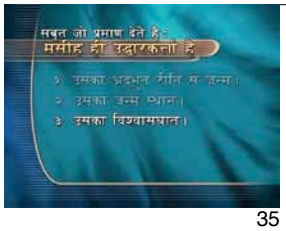

35

उसके साथ यहूदा ने जो विश्वासघात किया हम उसे एक उदाहरण के रूप में लेते हैं।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

36

(मूलपाठ : भजनसंहिता ४१ : ९)

"मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विरूद्ध लात उठाई है।"

पतरस ने यीशु से पूछा कौन उसे विश्वासघात करने जा रहा है, और यीशु ने उत्तर दिया,

37

"....जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूंगा, वही है...."

यूहन्ना १३ : २६

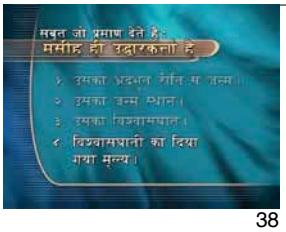

38

विश्वासघाती को दिया गया मूल्य

39

".....तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चांदी के तीस टुकड़े तौल दिए।"

जकर्याह ११ : १२

40

(मूलपाठ : मत्ती २६ : १४, १५)

"तब यहूदा इस्करियोती – नाम बारह चेलों में से एक महायाजकों के पास गया"

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

41

और कहा, "यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे?" उन्होंने उसे तीस चांदी सिक्के तौलकर दे दिए।"

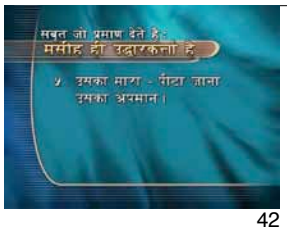

42

उसका मारा - पीटा जाना उसका अपमान

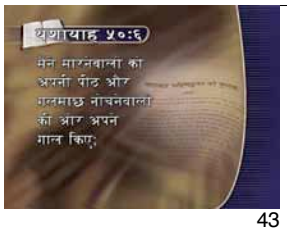

43

(मूलपाठ : यशायाह ५० : ६)

"मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए;

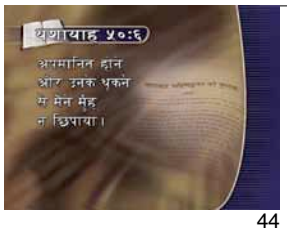

44

अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुँह न छिपाया।"

यशायाह ५० : ६

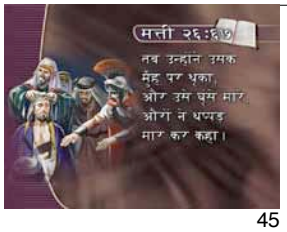

45

(मूलपाठ : मत्ती २६ : ६७)

"तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार कर कहा,"

मत्ती २६ : ६७

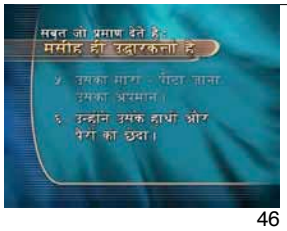

46

उन्होंने उसके हाथों और पैरों को छेदा।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

47

(मूलपाठ : भजनसंहिता २२ : १६)

".....वे मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं।"

भजनसंहिता २२ : १६

यीशु के जी उठने के पश्चात, थोमा, जो उसके चेलों में से एक था, उसे संदेह था कि वह जी उठा है, सचमुच मसीह के हाथ और पैर छेदे गए हैं इस संदर्भ में। उसने कहा,

48

...जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं,

49

.....मैं प्रतीति नहीं करूंगा।"

यूहन्ना २० : २५

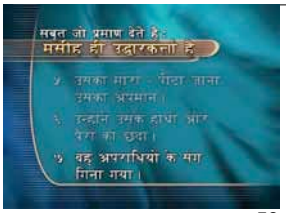

50

वह अपराधियों के संग गिना गया

ध्यान दीजिए मसीह की भविष्यवाणी सीधे रूप में कैसे पूरी हुई :

51

(मूलपाठ : यशायाह ५३ : १२)

".....वह अपराधियों के संग गिना गया।"

यशायाह ५३ : १२

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

52

(मूलपाठ : मरकुस १५ : २७, २८)

"उन्होंने उसके साथ दो डाकू एक उसकी दाहिनी ओर, एक उसकी बाई ओर क्रूस पर चढ़ाए।"

53

तब धर्मशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ।"

मरकुस १५ : २७, २८

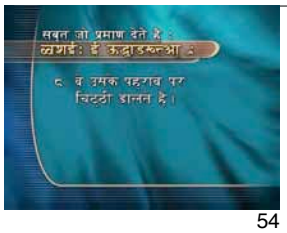

54

वे उसके पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं।

यीशु की मृत्यु से हजारों वर्ष पूर्व राजा दाऊद ने यह कहा था कि यीशु के वस्त्रों का क्या होगा :

55

(मूलपाठ : भजनसंहिता २२ : १८)

"वे मेरे वस्त्र आपस में बाटंते हैं, और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं।"

भजनसंहिता २२ : १८

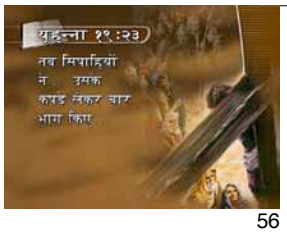

56

(मूलपाठ : यूहन्ना १९ : २३, २४)

"उन्होंने कहा.....हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किसका होगा.....

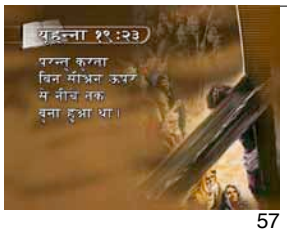

57

परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

58

उन्होंने कहा.....हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किसका होगा।"

यूहन्ना १९ : २३, २४

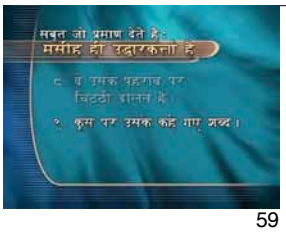

59

क्रूस पर उसके कहे गए शब्द

60

(मूलपाठ : भजनसंहिता २२ : १)

"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

भजनसंहिता २२ : १

पुराने नियम के इस अध्याय को मत्ती २७ : ४६ से तुलना कीजिए:

61

(मूलपाठ : मत्ती २७ : ४६)

"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तुने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

अपनी मृत्यु से नवें घण्टे पहले यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा।

62

बहुत - सी भविष्यवाणियाँ इंसानी यीशु के नियंत्रण से पूर्णरूप से बाहर थीं।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

63

वह अपने जन्म के स्थान का प्रबन्ध नहीं कर सकता था।

64

उसके जन्म का तरीका,

65

उसके साथ विश्वासघात

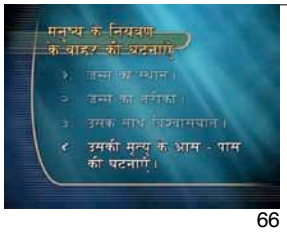

66

या उसकी मृत्यु के आस - पास की घटनाएँ।

67

यीशु सचमुच मसीह थे, जैसा दावा उन्होंने किया था। जब उन्हें दुःखदायी क्रुस पर चढ़ाया गया, पीड़ा पहुँचने तक पीटा गया, उनके हाथों और पैरों में कीलें ठोकीं गई, कांटो का ताज पहनाया गया, अपमानित किया गया और ठट्ठे में उड़ाया गया,

68

"वे चाहते तो अपने आपको बचाने के लिए दस हजार स्वर्गदूतों को बुलाकर दुनिया को नष्ट कर सकते थे।" वे स्वंय को और हमें एक साथ नहीं बचा सकते थे।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

69

क्या कभी - कभी आप यह सोचते हैं कि कोई सचमुच आप की परवाह करता है?

यीशु करते हैं!

बहुत पहले यरूशलेम के बाहर एक छोटी-सी पहाड़ी पर उन्होंने इस बात को प्रमाणित कर दिया था!

कैसा अनोखा प्यार!

यह हमारे घमण्डी हृदय को तोड़ देता है।

वे चाहते तो दस हजार स्वर्गदूतों को बुला सकते थे, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है, उन्होंने ऐसा नहीं किया !

इसके बदले उन्होंने मेरे और आपके लिए अपने प्राण दे दिये!

70

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि, "आपके लिए यीशु कौन है?"

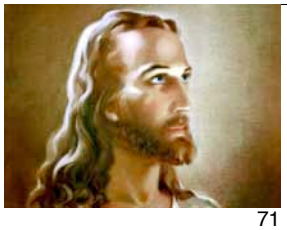
71

यीशु हमारे ग्रह पर एक सम्पूर्ण जीवन जीने और हमारे पाप से भरे जीवन की जगह को लेने के लिए आया।

जो मृत्यु हमें मिलनी चाहिए थी उसने उस मृत्यु को अपने ऊपर ले लिया, ताकि हमें अनन्त जीवन मिल सके !

उसके बलिदान के विषय में बाइबिल यह कहती है,

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

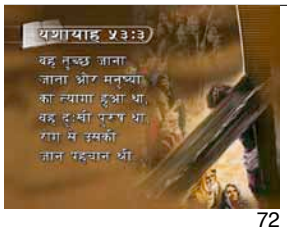

72

(मूलपाठ : यशायाह ५३ : ३ - ७)

"वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था, वह दुःखी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहचान थी.....

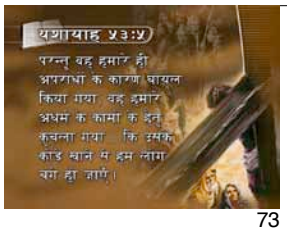

73

परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ।

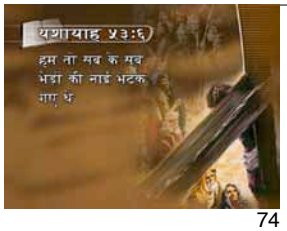

74

"हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे.....

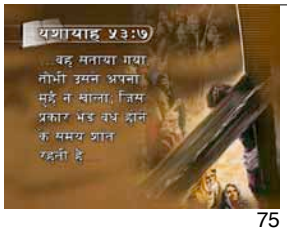

75

वह सताया गया, तौभी उसने अपना मुहँ न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय शांत रहती है।"

यशायाह ५३ : ३ - ७

76

यहाँ पर हम देखते हैं कि यीशु को एक मेम्ने की तरह बताया गया है।

बाइबिल में उसे बहुत बार "मेम्ना" कहा गया है।

77

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : ८)

प्रकाशितवाक्य १३ : ८ कहता है "....उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है।"

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

78

(प्रकाशितवाक्य ५ : ८, १२)

"....चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े.....

79

(कहता है) "वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ है....."

प्रकाशितवाक्य ५ : ८, १२

यीशु उस मेम्ने ने हम सबको हमेशा की मृत्यु से बचाकर उसके बदले में हमें अनन्त जीवन दिया।

80

(मूलपाठ : रोमियो ६ : २३)

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है,

81

परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।"

रोमियो ६ : २३

82

आदम और हव्वा ने पाप किया और उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया गया।

परमेश्वर को उन्हें उनके बाग से जो उनका घर था बेदखल करना पड़ा और उसके बाद वे कभी भी जीवन के वृक्ष में से कुछ नहीं खा सके। उनकी जीवन शक्ति उनके मृत्यु पर्यन्त धीरे-धीरे घटती गई।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

83

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : २४)

"इसलिए आदम को उसने निकाल दिया और अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को नियुक्त कर दिया,

84

और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिए, चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।"

उत्पत्ति ३ : २४

85

परमेश्वर ने उन्हें बचाने के लिए अपनी योजना को उन्हें बताया।

86

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १५)

"मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश (शैतान के अनुयायी) और इसके वंश के बीच में (मसीह के अनुयायी) बैर उत्पन्न करूंगा।

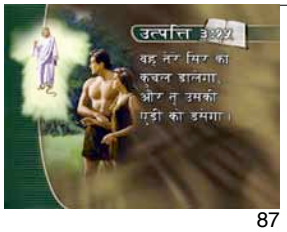

87

और वह (यीशु) तेरे (शैतान के) सिर को कुचल डालेगा, और तू (शैतान) उसकी (यीशु की) एड़ी को डसेगा।"

उत्पत्ति ३ : १५

88

दबाव से तोड़ने का क्या अर्थ है?

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

89

इब्रानी भाषा में "कुचलने" का अर्थ "दबाव से तोड़ना" है। किसी के सिर को कुचलना पैर के डसने से अधिक गम्भीर है।

मसीह शैतान के ऊपर विजयी होगा।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी योजना का स्मरण दिलाने और उन्हें बचाने के लिए कुछ और भी किया।

90

उसने बलिदान करने की व्यवस्था स्थापित की। उनको परमेश्वर के "मेम्ने" (यीशु) में अपना विश्वास दिखाना था जो एक दिन उन्हें हमेशा की जिन्दगी देने के लिए मरेगा।

91

बाइबिल हमें निश्चित रूप से यह नहीं बताती कि यह बलिदान की व्यवस्था कब शुरू हुई थी। आदम और हव्वा नंगे थे और परमेश्वर ने खाल से उनके लिए कपड़े बनाए।

और अगले ही अध्याय में कैन और हाबिल बलिदानों को लाए।

92

(मूलपाठ : उत्पत्ति ४ : ४,५)

"हाबिल भी अपनी भेड़ - बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

93

तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया।"

उत्पत्ति ४ : ४

94

परमेश्वर ने कैन और उसकी भेंट को ग्रहण नहीं किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ।"

उत्पत्ति ४ : ५

हाबिल एक मेम्ना लाया जो परमेश्वर के मेम्ने को प्रदर्शित करता था, परन्तु कैन भूमि की उपज लाया। कैन का दान परमेश्वर के मेम्ने के वध में विश्वास को नहीं दर्शाता था।

95

(मूलपाठ : इब्रानियों ९ : २२)

".....बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।"

इब्रानियों ९ : २२

96

जब परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया, तब उसने उन्हें पवित्र - स्थान के धार्मिक संस्कारों के द्वारा बहुत से पाठ सिखाए जो उसने मूसा से बनवाए थे। वह पवित्र स्थान या तम्बू, स्वर्ग में स्थित सच्चे तम्बू की नकल थी।

97

फसह उनमें से एक धार्मिक संस्कार था।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

98

पहले महीने के चौदहवें दिन, लोगों को यह निर्देश दिया जाता था कि वे एक मेम्ने का वध करके उस मेम्ने के रक्त को अपने दरवाजों की चौखट के सिरों पर लगाएँ।

यह इस बात का चिन्ह था कि मेम्ने के रक्त से वे बचाए जाएंगे।

99

उस रात मौत का फरिश्ता उनके घरों के ऊपर से गुजरा और जिनके घरों पर रक्त लगा हुआ था उन घरों के अन्दर रहने वालों को उसने कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

100

फसह उन्हें यह याद दिलाता था कि केवल मेम्ने का लोहू ही हमें नाश होने से बचा सकता है। जानवरों के बलिदान से पाप साफ नहीं हो सकता।

परन्तु परमेश्वर के बलिदान पर लोगों का विश्वास ही उन्हें उनके पापों से बचा सकता है।

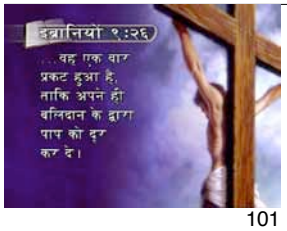

101

(मूलपाठ : इब्रानियों ९ : २६)

"....वह एक बार प्रकट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे...."

इब्रानियों ९ : २६

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

102

(मूलपाठ : इब्रानियों १० : ४)

"क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।"

इब्रानियों १० : ४

103

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को मसीह घोषित किया, और यीशु को इशारा करके कहा,

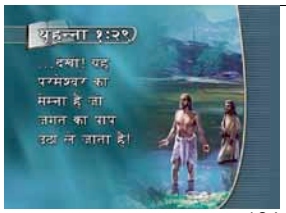

104

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : २९)

".....देखो! यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है! "

यूहन्ना १ : २९

105

धार्मिक बलिदानों की व्यवस्था मसीह का परमेश्वर का मेम्ना होने का संकेत देती आ रही थीं। पुराने नियम में सदियों से मरने वाले प्रत्येक मेम्ने का बहाया हुआ रक्त यीशु के बहाये रक्त की ओर इशारा करता है।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

106

यीशु ही दुनिया के उद्धारकर्त्ता हैं।

यीशु पाप क्षमा करते हैं।

यीशु माफी देते हैं।

यीशु हमें हमारे दोषों से हमें मुक्ति देते हैं।

यीशु हमें जीना सिखाते हैं।

यीशु का जीवन हमारे लिए एक उदाहरण है।

यीशु हमारे जीवन को योग्य बनाते हैं।

यीशु हमें अन्दर से बदलते हैं।

यीशु हमें नया जीवन देते हैं।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

107

सन् १९१४, में जब सर अरनेस्ट शेकलटन उत्तरी ध्रूवी महासागर को पार करने का प्रयास कर रहे थे तब उनका एंडयोरेंस नामक जहाज एक बर्फ के तैरते हुए टुक़ड़े से टकरा गया। शेकलटन और उनके साथी कई दिनों तक बहते रहे जब तक कि वे एलीफेन्ट द्वीप पर पहुँच नहीं गए। शेकलटन ने अपने आदमियों से वहाँ शिविर लगवाया जहाँ पर वे अपनी बची हुई सामग्री को सुरक्षित रख सकें और आने वाली सर्दी में जीने का प्रयास कर सकें। परन्तु उन्हें शीघ्र ही यह महसूस हो गया कि कोई भी आकर उन्हें नहीं बचाएगा। किसी को यह अनुमान नहीं था कि वे कहाँ पर हैं। वे लोग बर्फीले तूफान और ध्रूवी महासागर के कारण दुनिया से अलग गए थे। उनके बचने की केवल एक ही आशा थी: उनमें से कोई एक उस बैरी महासागर को पार करे और मदद लेकर आए। शेकलटन ने यात्रा करने के लिए एक बीस फुट बड़ी नाव तैयार करनी शुरू कर दी। अपनी इच्छा से आए हुए समूह के छः लोगों को उसने चुना जिन्हें ८०० मील के तूफानी समुद्र को पार करना था ताकि वे दक्षिणी जोर्जिया के बर्फ से जमे हुए द्वीप पर नोरविजियन मछुवारों के पड़ाव पर पहुँच सकें।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

108

साल के सबसे तूफानी समय में खुली नाव में जाना असंभव दिखाई देता था। परन्तु शेकलटन अपने आदमियों के साथ गया। कई दिनों तक वे घबराहट में एक साथ अपने आपको मोटे कपड़े से ढककर बैठे रहे, जहाज के सामने के भाग को उन्होंने भंयकर लहरों की ओर मोड़ दिया, और वे यह प्रार्थना कर रहे थे कि हवा उनके छोटे से पाल को फाड़ न दे। उनकी हड्डियों को कंपा देने वाली ठन्ड़ थी, उनके सोने वाले बैग बर्फ के कारण जम गए थे, बर्फीला पानी उनकी पीठ पर झरने की तरह बह रहा था, उन्हें भूख और प्यास भी लग रही थी। उनकी यात्रा शुरू होने के चौदह दिनों बाद जब सब लगभग ठण्ड और प्यास से मर रहे थे, तब उन्हे दक्षिणी जोर्जिया की काली चट्टानें दिखाई दीं। शेकलटन ने यह दुर्लभ कार्य कर दिखाया था; जल्दी ही एक जहाज उसके बचे हुए नि:सहाय लोगों को बचाने के लिए रवाना हुआ। जब परमेश्वर ने हमारी बुरी अवस्था को देखा और देखा कि हम अपने द्वीप में अकेले हो गए थे, पाप के असीमित समुद्र चारों ओर से घेरे हुए था, तब उसने स्वंय को उस बैरी समुद्र में डुबो दिया। उसने अपने ऊपर मनुष्य जाति की कातिल, अतिशीत विशाल बुराई को ले लिया।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

109

पूरे विश्व में यीशु के समान और कोई भी नहीं है। केवल वही है जो हमको बचा सकते हैं। केवल वे ही हैं जो हमारे अपराधों को दूर करके हमारे जीवन को बदल सकते हैं।

केवल वे ही हैं जो हमें हमेशा की जिन्दगी प्रदान कर सकते हैं। क्या आप इसी वक्त अपना हाथ उठाना पसन्द करेगें, और कहेंगे, " हाँ यीशु, मैं आज रात को आपको अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करता हूँ।

हाँ, प्रभु, मुझे विश्वास है कि आप मेरे लिए मरे।

हाँ, प्रभु, मैं अपना जीवन आपको देता हूँ।

केवल अपना हाथ खड़ा करें, मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूँ।